The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 3 | Issue 7 | July 2025
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

'वसुधैव कुटुम्बकम्' की समकालीन प्रासंगिकता - एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

Dr. Jayanta Nuniya

Assistant Professor, Department of Education, National Sanskrit University, Tirupati

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.16880374

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 31-07-2025

Published: 10-08-2025

Keywords:

वसुधैव कुटुम्बकम्, भारतीय संस्कृति, वैश्विक शांति, समावेशिता, मानवतावाद, सांस्कृतिक एकता, अंतरराष्ट्रीय संबंध, पर्यावरण चेतना, वैश्वीकरण,

ABSTRACT

'वसुधैव कुटुम्बकम्' - यह शाश्वत भारतीय सूत्रवाक्य संपूर्ण पृथ्वी को एक परिवार मानने की दृष्टि प्रस्तुत करता है। यह विचार भारतीय संस्कृति की उस मानवतावादी और समावेशी चेतना का प्रतीक है जो भौगोलिक सीमाओं, धार्मिक भिन्नताओं, भाषायी विविधताओं और जातिगत भेदभाव से परे जाकर सम्पूर्ण सृष्टि को आत्मीयता की दृष्टि से देखता है। आज जब विश्व युद्ध, आतंकवाद, शरणार्थी संकट, जलवायु परिवर्तन, और सामाजिक विघटन जैसी समस्याओं से जूझ रहा है, तब इस विचार की प्रासंगिकता और आवश्यकता और अधिक बढ़ जाती है। यह संगोष्ठी पत्र 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के वैदिक मूल, भारतीय संस्कृति में इसकी भूमिका, और आज के वैश्विक परिप्रेक्ष्य में इसकी उपयोगिता का विश्लेषण करता है। इसमें यह भी दर्शाया गया है कि भारत किस प्रकार इस आदर्श को वैश्विक नीति और कूटनीति में स्थान देकर विश्व शांति और सह-अस्तित्व को दिशा प्रदान कर सकता है।

भूमिका (Introduction)

'वसुधैव कुटुम्बकम्' - यह महान वैदिक उद्घोष भारतीय संस्कृति की सार्वभौमिक दृष्टि का दार्शनिक स्तंभ है। संस्कृत के इस वाक्य का शाब्दिक अर्थ है - 'पूरा विश्व एक परिवार है।' यह दृष्टिकोण केवल एक आध्यात्मिक या भावनात्मक संकल्पना नहीं, बल्कि भारतीय जीवन-दर्शन की मूल आत्मा है, जो मनुष्य को मनुष्य से जोड़ता है, और सम्पूर्ण सृष्टि को सजीव एवं आत्मीय भाव से देखने की प्रेरणा देता है।

इस मंत्र का मूल स्रोत 'महा उपनिषद' है, जहाँ यह विचार व्यक्त किया गया कि **'अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम्। उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्॥'** अर्थात् - "यह मेरा है और वह पराया - ऐसा विचार संकीर्ण बुद्धि वालों का होता है, जबकि उदार हृदय वाले सम्पूर्ण पृथ्वी को ही अपना परिवार मानते हैं।" यह पंक्ति न केवल भारत की सांस्कृतिक उदारता का प्रतिबिंब है, बल्कि विश्वबंधुत्व और वैश्विक एकता की आधारशिला भी है।

आज के वैश्विक परिप्रेक्ष्य में जब अनेक राष्ट्र आपसी संघर्ष, धार्मिक असहिष्णुता, नस्लीय भेदभाव, और जलवायु संकट जैसी समस्याओं से ग्रस्त हैं, तब यह आदर्श पुनः प्रासंगिक हो गया है। विश्व जब एक ओर तकनीकी रूप से 'ग्लोबल विलेज' बन रहा है, वहीं सामाजिक और सांस्कृतिक रूप से खंडित होता जा रहा है। ऐसे समय में 'वसुधैव कुटुम्बकम्' एक ऐसा प्रकाशस्तंभ है, जो सभ्यताओं को जोड़ सकता है, अंतर को सेतु में बदल सकता है, और शांति तथा सह-अस्तित्व की दिशा में विश्व समाज को आगे बढ़ा सकता है।

भारत ने प्राचीन काल से ही इस दर्शन को केवल सैद्धांतिक नहीं, बल्कि व्यावहारिक रूप में भी अपनाया है। महात्मा गांधी ने जब **'सर्व धर्म समभाव'** का संदेश दिया, या जब भारत ने आधुनिक युग में G-20 जैसे वैश्विक मंचों पर **'एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य'** (One Earth, One Family, One Future) का नारा दिया, तब यह प्रमाणित हुआ कि यह सूत्रवाक्य आज भी भारत की नीतियों, विचारों और कार्यों में जीवंत है।

इस संगोष्ठी पत्र के माध्यम से हम यह समझने का प्रयास करेंगे कि **'वसुधैव कुटुम्बकम्'** न केवल एक आदर्श है, बल्कि यह आज की आवश्यकता है - चाहे वह शिक्षा, राजनीति, पर्यावरण, वैश्विक कूटनीति, या सामाजिक समरसता का क्षेत्र हो। यह भारतीय संस्कृति की उस मूल चेतना का पुनः स्मरण है जो कहती है – **'अहं ब्रह्मास्मि'**, परंतु साथ ही **'त्वमेव सर्वं मम देव देव'।**

उद्देश्य (Objectives)

- 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के वैदिक और सांस्कृतिक अर्थ को समझाना।
- इस आदर्श की ऐतिहासिक और दार्शनिक पृष्ठभूमि का विवेचन करना।
- आज के सामाजिक, राजनीतिक, पर्यावरणीय और वैश्विक परिप्रेक्ष्य में इसकी प्रासंगिकता दर्शाना।
- इस विचार को व्यवहार में अपनाने की आवश्यकता पर बल देना।
- भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों के वैश्विक योगदान को रेखांकित करना।

विधि (Methodology)

इस अध्ययन में गुणात्मक (qualitative), दार्शनिक तथा ऐतिहासिक विश्लेषण की पद्धति अपनाई गई है। इसमें वैदिक ग्रंथों, उपनिषदों, महाभारत, रामायण और स्मृति साहित्य के साथ-साथ समकालीन सांस्कृतिक संदर्भों का अध्ययन किया गया है ताकि 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के विचार का व्यापक मूल्यांकन किया जा सके। साथ ही, वर्तमान वैश्विक घटनाओं, भारत की कूटनीतिक नीतियों और नीति दस्तावेजों जैसे राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, संयुक्त राष्ट्र संघ के घोषणापत्र, तथा वैश्विक मंचों पर भारत के वक्तव्यों का संदर्भ लिया गया है।

इसके अतिरिक्त केस स्टडी पद्धति के अंतर्गत कोविड-19 महामारी के समय भारत की "वैक्सीन मैत्री" नीति, अंतरराष्ट्रीय योग दिवस की पहल, और वैश्विक मानवीय राहत अभियानों का विश्लेषण किया गया है। माध्यमिक स्रोतों में शोध-

पत्रों, पत्रिकाओं, पुस्तकों और समाचार लेखों का उपयोग करते हुए विचारों को समर्थित किया गया है। यह अध्ययन तुलनात्मक दृष्टिकोण के माध्यम से यह भी विश्लेषण करता है कि यह भारतीय मूल्य वर्तमान वैश्विक चुनौतियों के समाधान में किस प्रकार सहायक हो सकता है।

विषयवस्तु (Main Theme)

'वसुधैव कुटुम्बकम्' का शाब्दिक अर्थ है — "पृथ्वी ही परिवार है।" यह विचार केवल आध्यात्मिक नहीं, बल्कि सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक दृष्टि से भी अत्यंत व्यावहारिक है। प्राचीन भारत में यह विचारधारा जीवन का अभिन्न अंग थी। अतिथि देवो भवः, सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्व धर्म समभाव जैसी अनेक अवधारणाएँ इसी मूल चिंतन से जुड़ी हैं।

आधुनिक विश्व में जब विभिन्न प्रकार की असहिष्णुता, कट्टरवाद, युद्ध और साम्राज्यवादी मानसिकता फैल रही है, तब यह विचार एक सहिष्णु और समरस समाज की दिशा में अग्रसर करने वाली शक्ति बन सकता है। भारत ने हाल ही में 'G20' की अध्यक्षता करते हुए 'वन अर्थ, वन फैमिली, वन फ्यूचर' (One Earth, One Family, One Future) का नारा दिया, जो सीधे-सीधे वसुधैव कुटुम्बकम् की आधुनिक अभिव्यक्ति है।

भारतीय विदेश नीति भी इसी सिद्धांत को दर्शाती है। भारत ने भूतपूर्व कोरोना महामारी के समय वैक्सीन मैत्री (Vaccine Maitri) कार्यक्रम के तहत अनेक देशों को निःशुल्क टीके प्रदान किए। आपदाओं के समय भारत का सहायता भेजना, पड़ोसी देशों से मैत्रीपूर्ण संबंध बनाए रखना, अंतरराष्ट्रीय मंचों पर शांति और संवाद को प्राथमिकता देना — यह सब इसी भावना के विस्तार हैं।

शिक्षा क्षेत्र में भी इस सिद्धांत को अपनाया जा रहा है। नई शिक्षा नीति में भारतीय संस्कृति, भाषा, योग, ध्यान, और नैतिक शिक्षा को स्थान देकर विद्यार्थियों को वैश्विक नागरिकता की भावना से जोड़ा जा रहा है। इससे बालकों में न केवल ज्ञान का विकास होता है, बल्कि सामाजिक दायित्वबोध, सहानुभूति, और मानवीय मूल्यों का भी विकास होता है।

युवाओं में यह दृष्टिकोण आत्मकेंद्रितता और भौतिकवाद की प्रवृत्ति को संतुलित करने में सहायक बनता है। सोशल मीडिया और डिजिटल युग ने जहाँ मनुष्यों को आभासी रूप से जोड़ा है, वहीं व्यक्तिगत स्तर पर एकाकीपन और संवेदनहीनता भी बढ़ी है। ऐसे समय में 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का भाव उन्हें यथार्थ मानवीय संबंधों की ओर उन्मुख कर सकता है।

1. वर्तमान वैश्विक परिप्रेक्ष्य में इसकी आवश्यकता

(क) युद्ध और असहिष्णुता –

रूस-यूक्रेन युद्ध, गाजा संघर्ष, ताईल्यान्ड-कम्बोडिया संघर्ष, आतंकवाद, और सांप्रदायिक हिंसा से दुनिया अशांत है। इन सभी में 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना लुप्त है। यदि यह दर्शन अपनाया जाए तो कई समस्याएँ हल हो सकती हैं।

(ख) जलवायु परिवर्तन –

वातावरण, जल और ऊर्जा संकट वैश्विक चिंता बन चुकी है। पर्यावरण संरक्षण भी 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' की भावना से जुड़ा है। यदि हम पृथ्वी को माँ के रूप में देखें (भारतीय सोच), तो हम उसे नष्ट नहीं करेंगे।

(ग) शरणार्थी और विस्थापन संकट -

सीरिया, अफगानिस्तान, सूडान जैसे देशों में लाखों लोग शरणार्थी बन चुके हैं। उन्हें पराया न समझकर 'मानव परिवार' का सदस्य मानना आवश्यक है।

(घ) सांस्कृतिक विविधता और वैश्विक संवाद –

पश्चिमी एकरूपता के स्थान पर भारतीय बहुलता का आदर्श दुनिया को सह-अस्तित्व सिखाता है।

2. भारत की भूमिका और उत्तरदायित्व –

भारत, 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का जन्मस्थान होते हुए आज भी G-20 जैसी वैश्विक बैठकों में इस विचार को प्रमुखता से रखता है। भारत ने कोविड-19 के समय दुनिया को वैक्सीन भेजकर और दवाएं देकर यह साक्षात सिद्ध किया कि यह केवल श्लोक नहीं, बल्कि जीवन मूल्य है।

भारत की विदेश नीति भी 'नेबरहुड फर्स्ट', 'एक्ट ईस्ट' और 'सागर' (SAGAR: Security and Growth for All in the Region) जैसी अवधारणाओं से इसी भावना को दर्शाती है।

3. शिक्षा में इसकी नैतिक और मानवीय भूमिका -

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) में भी भारतीय ज्ञान प्रणाली को पुनर्स्थापित करने का प्रयास हुआ है। नीति में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि शिक्षा का उद्देश्य केवल रोजगार नहीं, बल्कि एक समग्र और मूल्य-आधारित व्यक्ति निर्माण होना चाहिए।

'वसुधैव कुटुम्बकम्' के माध्यम से छात्रों में वैश्विक नागरिकता (Global Citizenship), सांस्कृतिक सहिष्णुता, संवाद कौशल, और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना का विकास किया जा सकता है। आज की पीढ़ी यदि इन मूल्यों से युक्त होती है, तो वह न केवल एक कुशल पेशेवर बनेगी, बल्कि एक संवेदनशील, नैतिक और उत्तरदायी नागरिक भी।

4. युवाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत -

आज का युवा वर्ग अक्सर प्रतिस्पर्धा, सफलता, और भौतिक उपलब्धियों में उलझा रहता है, जिससे उसमें आत्मकेन्द्रितता और संवेदनहीनता का विकास होता है। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना उसे आत्ममूल्यांकन और समष्टिगत सोच की ओर प्रेरित कर सकती है।

डिजिटल युग में जब सोशल मीडिया और वर्चुअल नेटवर्किंग ने संबंधों को कृत्रिम बना दिया है, तब यह भाव वास्तविक और स्थायी मानवीय संबंधों की ओर लौटने की चेतना देता है।

5. सांस्कृतिक आदान-प्रदान और वैश्विक सौहार्द्र का मार्ग -

भारतीय योग, आयुर्वेद, शास्त्रीय संगीत, भाषा, और खानपान आज विश्व के अनेक देशों में सम्मानित हो रहे हैं। यह सभी 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के सांस्कृतिक स्वरूप को सशक्त करते हैं। अंतरराष्ट्रीय योग दिवस इसका जीवंत उदाहरण है। जब संपूर्ण विश्व एक साथ मिलकर योग करता है, तब वह केवल एक व्यायाम नहीं, बल्कि एक वैश्विक चेतना का स्वरूप होता है।

6. पर्यावरणीय और नैतिक चेतना में योगदान -

'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना केवल मानव समाज तक सीमित नहीं है, बल्कि यह पृथ्वी, प्रकृति, पशु-पक्षियों, जलवायु और संपूर्ण सृष्टि के प्रति उत्तरदायित्व की भावना को भी विकसित करती है। वर्तमान पर्यावरणीय संकटों के समाधान हेतु यह दृष्टिकोण अत्यंत आवश्यक हो जाता है।

7. प्रासंगिकता (Relevance in Present Context) -

वर्तमान विश्व संकटों के आलोक में यह सिद्धांत अत्यंत प्रासंगिक हो गया है:

- मानवता की रक्षा — व्यक्ति को व्यक्ति से जोड़ने का यह सबसे प्रभावी मार्ग है।
- सांस्कृतिक संवाद और सह-अस्तित्व — दुनिया को सांस्कृतिक असहिष्णुता से बचाने में सहायक।
- वैश्विक शांति और भाईचारा — राष्ट्रों के बीच सहयोग और सम्मान की भावना को बढ़ावा देता है।
- आर्थिक न्याय और संसाधनों का समान वितरण — जब सभी को परिवार का अंग माना जाए तो कोई भूखा, वंचित या उपेक्षित नहीं रहेगा।

निष्कर्ष (Conclusion) -

'वसुधैव कुटुम्बकम्' केवल एक वैदिक सूत्र या सांस्कृतिक आदर्श नहीं, बल्कि वह वैश्विक मूल्य है जिसकी आज की खंडित, हिंसक और स्वार्थपरक दुनिया को सबसे अधिक आवश्यकता है। इस विचार में न केवल आध्यात्मिक उदारता समाहित है, बल्कि व्यावहारिक समाधान की शक्ति भी है-चाहे वह अंतरराष्ट्रीय संबंध हों, शरणार्थी संकट, पर्यावरणीय असंतुलन या सामाजिक असमानता।

भारत के लिए यह केवल गौरव की बात नहीं कि उसने इस महान सिद्धांत को जन्म दिया, बल्कि यह उसका नैतिक कर्तव्य भी है कि वह इस सिद्धांत को अपने कार्यों, नीतियों, और वैश्विक साझेदारियों में जीवन्त बनाए। जैसे-जैसे भारत विश्व में 'विकसित राष्ट्र' की ओर अग्रसर हो रहा है, वैसे-वैसे उसकी जिम्मेदारी बनती है कि वह 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना को केवल भाषणों तक सीमित न रखे, बल्कि उसे कूटनीति, व्यापार, संस्कृति, शिक्षा और समाज में सक्रिय रूप से लागू करे।

आज जब सीमाएँ कागज़ी होती जा रही हैं, और डिजिटल युग में हम सब एक साझा मंच पर संवाद कर सकते हैं, तब इस मंत्र का महत्व और अधिक बढ़ जाता है। साझा मानवता, साझा धरती और साझा भविष्य — यही "वसुधैव कुटुम्बकम्" की संकल्पना है, और यही मानवता की आशा का मार्ग भी। हमें चाहिए कि:

- शिक्षा में वैश्विक दृष्टि का समावेश हो।
- नीतियों में समरसता और पर्यावरणीय संवेदनशीलता हो।
- सामाजिक संवाद और सह-अस्तित्व को बढ़ावा दिया जाए।
- और सबसे महत्वपूर्ण — निजी स्तर पर भी हम दूसरों को 'पराया' नहीं, 'परिवार' माने।

यदि यह विचार व्यवहार में उतरे, तो न केवल भारत, बल्कि पूरी दुनिया एक ऐसे परिवार का रूप ले सकती है जहाँ कोई भेद नहीं, केवल प्रेम, करुणा और सहयोग का वातावरण हो।

अतः 'वसुधैव कुटुम्बकम्' आज केवल एक पुरातन श्लोक नहीं, बल्कि एक नवीन दिशा है — मानवता के लिए, शांति के लिए, और भविष्य की दुनिया के लिए।

संदर्भ (References)

- "Maha Upanishad." Sacred Texts of Hinduism, Translated by Swami Madhavananda, Advaita Ashrama, 2006.
- Bhagavad Gita. Translated by Eknath Easwaran, Nilgiri Press, 2007.
- G20 India. "G20 Summit 2023 Official Statements." G20India2023.org, Government of India, 2023.
- Gandhi, M.K. Hind Swaraj or Indian Home Rule, Navajivan Publishing House, 2001.
- Indira Gandhi National Centre for the Arts. Bharatiya Sanskriti Kosh (भारतीय संस्कृति कोश), IGNCA Publications, New Delhi, 2015.
- Ministry of External Affairs, Government of India. "India's Foreign Policy." mea.gov.in, 2023.
- Radhakrishnan, Sarvepalli. Indian Philosophy, Vol. 1, Oxford University Press, 1999.
- UNESCO. Intercultural Dialogue and Cultural Diversity Reports, UNESCO Publishing, 2022.
- United Nations. Charter of the United Nations and Statute of the International Court of Justice, UN Publications, 2015.
- Vivekananda, Swami. The Complete Works of Swami Vivekananda, Vol. 1, Advaita Ashrama, 2003.